Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जैनेंद्र कुमार एवं अज्ञेय की मनोवैज्ञानिक कहानियों की भावगत विशेषताएँ : एक तुलनात्मक अध्ययन

महीपाल दान*

* सहायक आचार्य (हिन्दी) सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नाथद्वारा (जिला राजसमंद) (राज.) भारत

शोध सारांश – हिन्दी कहानी साहित्य के विकास में मनोवैज्ञानिक कहानी-धारा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इस धारा ने कहानी को सामाजिक यथार्थ के बाह्य चित्रण से आगे बढ़ाकर मानव-मन की सूक्ष्म अनुभूतियों, अंतर्द्वंद्वों तथा अवचेतन की जटिलताओं तक पहुँचाया। प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी में जैनेंद्र कुमार एवं अज्ञेय ऐसे दो प्रमुख कथाकार हैं जिन्होंने मनोवैज्ञानिक दृष्टि को कथा-साहित्य का आधार बनाया। जैनेंद्र ने व्यक्ति के अंतर्मन, प्रेम, नारी-चेतना तथा आत्मसंघर्ष को कथा का केंद्र बनाया, जबकि अज्ञेय ने आधुनिक मनुष्य की चेतना, अकेलेपन, अस्तित्व-बोध एवं आत्मविश्लेषण को अपनी कहानियों का मूल विषय बनाया। प्रस्तुत शोध-पत्र में दोनों कथाकारों की मनोवैज्ञानिक कहानियों की भावगत विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी – मनोवैज्ञानिक कहानी, मनोविश्लेषणवाद, व्यक्तिवाद, अस्तित्ववाद, अंतर्द्वंद्व, आत्मविश्लेषण।

प्रस्तावना – बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक के बाद हिन्दी कहानी में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। कहानीकारों का ध्यान बाह्य सामाजिक जीवन से हटकर व्यक्ति के अंतर्जगत की ओर आकर्षित हुआ। इस परिवर्तन के पीछे आधुनिक मनोविज्ञान, विशेषत: सिग्मंड फ्रायड के मनोविश्लेषण सिद्धांतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।[1]

फ्रायड ने मानव-व्यवहार के मूल में अवचेतन मन, दमित इच्छाओं तथा मानसिक ग्रंथियों को प्रमुख माना। परिणामस्वरूप साहित्यकारों ने मानव-मन की जटिलताओं को अपनी रचनाओं का विषय बनाना आरम्भ किया। हिन्दी साहित्य में इस नई चेतना के प्रमुख प्रतिनिधि जैनेंद्र कुमार एवं अज्ञेय हैं।[2]

जैनेंद्र कुमार की मनोवैज्ञानिक कहानियों की भावगत विशेषताएँ:

1. **व्यक्तिवाद की प्रधानता –** जैनेंद्र कुमार की कहानियों में समाज की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्व दिया गया है। उनके पात्र सामाजिक मान्यताओं से संघर्ष करते हुए अपने आत्मसत्य की खोज करते हैं। वे व्यक्ति की स्वतंत्र सत्ता तथा उसकी आंतरिक चेतना को सर्वोपरि मानते हैं।[3]
2. **अंतर्द्वंद्व का चित्रण–** जैनेंद्र के पात्र बाहरी संघर्षों से अधिक मानसिक संघर्षों से जूझते हैं। प्रेम, कर्तव्य, नैतिकता, अहं और समर्पण के बीच उत्पन्न होने वाला द्वंद्व उनकी कहानियों का मूल आधार है। उनकी प्रसिद्ध कहानी 'पत्नी' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।[4]
3. **नारी-मन का गहन विश्लेषण–** जैनेंद्र हिन्दी साहित्य में नारी-मन के सर्वाधिक सूक्ष्म विश्लेषक माने जाते हैं। उनकी नारी पात्र संवेदनशील, आत्मसम्मानी तथा आत्मनिर्णय लेने वाली होती हैं। वे पारंपरिक आदर्श नारी की सीमाओं को तोड़कर स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में उभरती हैं।[5]
4. **प्रेम की मनोवैज्ञानिक व्याख्या–** जैनेंद्र ने प्रेम को केवल भावनात्मक आकर्षण न मानकर आत्मबोध एवं आत्मविकास का माध्यम माना है। उनके कथा-साहित्य में प्रेम का आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वरूप अधिक महत्वपूर्ण है।[6]
5. **आत्मपीड़ा एवं आत्मविश्लेषण –** उनके पात्र निरंतर आत्मविश्लेषण करते हैं। अपराधबोध, असफलता तथा मानसिक द्वंद्व उनके आत्मचिंतन को गहरा बनाते हैं। यही आत्मपीड़ा उनकी कहानियों को विशिष्ट मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान करती है।[7]

अज्ञेय की मनोवैज्ञानिक कहानियों की भावगत विशेषताएँ:

1. **व्यक्ति-चेतना का उद्घाटन –** अज्ञेय ने व्यक्ति को स्वतंत्र चेतना के रूप में चित्रित किया है। उनके पात्र जीवन के अर्थ, स्वतंत्रता तथा अस्तित्व की खोज में संलग्न रहते हैं।[8]
2. **आत्मविश्लेषण की प्रवृत्ति–** अज्ञेय के पात्र स्वयं अपने व्यवहार, निर्णयों तथा भावनाओं का विश्लेषण करते हैं। यही आत्मविश्लेषण उनकी कहानियों की प्रमुख विशेषता है।[9]
3. **चेतना-प्रवाह शैली –** अज्ञेय ने हिन्दी कहानी में चेतना-प्रवाह शैली का सफल प्रयोग किया। इस शैली के माध्यम से पात्रों की स्मृतियों, विचारों और मानसिक प्रतिक्रियाओं को स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत किया गया है।[10]
4. **अकेलेपन और अजनबीपन की अनुभूति –** आधुनिक जीवन की विडंबनाएँ, मानसिक रिक्तता और अकेलापन अज्ञेय की कहानियों का प्रमुख विषय हैं। 'रोज' कहानी की नायिका मालती आधुनिक स्त्री के इसी मानसिक संकट का प्रतिनिधित्व करती है।[11]
5. **अस्तित्ववादी चेतना –** अज्ञेय की कहानियों में व्यक्ति के अस्तित्वगत संकट, स्वतंत्रता, मृत्यु-बोध तथा जीवन के अर्थ की खोज को प्रमुखता प्राप्त है। यही कारण है कि उनकी कहानियाँ मनोवैज्ञानिक होने के साथ-साथ अस्तित्ववादी भी हैं।[12]
6. **दमित इच्छाओं और कुंठाओं का चित्रण –** फ्रायडीय मनोविश्लेषण

का प्रभाव अज्ञेय की कहानियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उनकी कहानियों में दबी हुई इच्छाएँ, अवचेतन मन तथा मानसिक कुंठाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।[13]

तुलनात्मक अध्ययन – जैनेंद्र और अज्ञेय दोनों ने हिन्दी कहानी को मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान की, किंतु उनकी दृष्टि में भिन्नता है। जैनेंद्र की कहानियाँ प्रेम, नारी-चेतना और आत्मसंघर्ष पर केंद्रित हैं, जबकि अज्ञेय आधुनिक मनुष्य के अकेलेपन, चेतना तथा अस्तित्वगत संकट को अभिव्यक्ति देते हैं। जैनेंद्र का मनोविज्ञान भावनात्मक एवं नैतिक धरातल पर विकसित होता है, जबकि अज्ञेय का मनोविज्ञान बौद्धिक एवं अस्तित्ववादी धरातल पर।[14]

निष्कर्ष – जैनेंद्र कुमार और अज्ञेय हिन्दी मनोवैज्ञानिक कहानी के दो प्रमुख स्तंभ हैं। जैनेंद्र ने हिन्दी कहानी को अंतर्मुखी चेतना, नारी-मन और प्रेम के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से समृद्ध किया, जबकि अज्ञेय ने आधुनिक मनुष्य की चेतना, अकेलेपन और अस्तित्वगत संकट को कथा का विषय बनाया। दोनों कथाकारों ने हिन्दी कहानी को मानसिक यथार्थ की नई भूमि प्रदान की तथा मनोवैज्ञानिक कहानी को एक सशक्त साहित्यिक धारा के रूप में प्रतिष्ठित किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 10वाँ संस्करण, पृ. 112.
2. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2022, पृ. 245.
3. मिथिलेश रोहतगी, हिन्दी की नई कहानियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, सुलभ बुक हाउस, मेरठ, 1979, पृ. 19.
4. डॉ. श्रीमती शर्मा त्रिपाठी, कहानी कला का विकास और इतिहास, पृ. 180.
5. डॉ. बलवंत लक्ष्मण कोतमिरे, हिन्दी गद्य के विविध साहित्य रूपों का उद्‌भव और विकास, किताब महल, प्रयागराज, 1988, पृ. 237.
6. वही, पृ. 240.
7. डॉ. हेतु भारद्वाज, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानव प्रतिमा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ. 97.
8. डॉ. रामदरश मिश्र, हिन्दी कहानी : अंतरंग पहचान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 124.
9. डॉ. बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृ. 307.
10. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, हिन्दी कहानी की शिल्पविधि का विकास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2009, पृ. 180.
11. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी नवलेखन, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2003, पृ. 96.
12. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, पृ. 198.
13. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, 2018, पृ. 567-5680.
14. डॉ. रामदरश मिश्र, हिन्दी कहानी : अंतरंग पहचान, पृ. 130.

****